MEN'S GILLETTE, STORY

BLADEFREGA

MEN'S GILLETTE, STORY

"Enzo," मेरी माँ ने मेरे पिता से कहा, "हमें उसे बोर्डिंग स्कूल में डालना होगा।

मुझसे अब Nando सँभाला नहीं जाता।

उसे क़ाबू में रखना नामुमकिन है।

इससे भी बुरा, वह अप्रत्याशित है।"

वह रुकी।

"पता है उसने आज क्या किया?"

"नहीं। बताओ।"

"वह दुकान में मेरे साथ था और, मेरी नज़र बचाकर, वे बड़ी क़ैंची ग़ायब हो गईं।

वही जो मैं कपड़ा काटने के लिए इस्तेमाल करती हूँ।

तीस मीटर लंबे कपड़े के थान।

मुझे दूसरी क़ैंची इस्तेमाल करनी पड़ी।

मैंने लगभग एक घंटे तलाश की।

फिर मैंने उसे वापस आते देखा।

शांत।

मुस्कुराता हुआ।

हाथ में क़ैंची लिए।"

मेरे पिता ने नज़र उठाई।

"वह कहाँ गया था?"

"बार में।"

"करने क्या गया था?"

"हमारा बेटा पाँच साल का है, Enzo।

तुम उसके बाप हो।

बेवक़ूफ़ों की तरह हँसने की बजाय ज़रा कोई ज़िम्मेदारी उठाने की कोशिश करो।

मुझे चिंता हो रही है।

इसका आगे क्या बनेगा?"

मेरी माँ डरी हुई थी।

जब मैं लौटा, हालाँकि, मैं अकेला नहीं था।

Rocco Pizzimenti, Orfeo Bar का मालिक, मेरे साथ वापस आया।

वह इतनी ज़ोर से हँस रहा था कि मुश्किल से खड़ा हो पा रहा था।

Rocco के मुताबिक़, उसे अक्सर मुझे 'सींगदार' कहकर चिढ़ाने में मज़ा आता था।

उस दोपहर मैंने मामला निपटाने का फ़ैसला कर लिया था।

"पता है उसने क्या किया?" Rocco ने कहा।

"वह वही क़ैंची लेकर बार में आया।

मेरा गला काटने के लिए।

मैंने दूरी बनाए रखी और उसकी खिल्ली उड़ाता रहा।

पूरी दुकान हँस रही थी।

पर वह हार मानने को तैयार नहीं था।

आख़िर में उन्हें उसे घसीटकर ले जाना पड़ा।"

मेरे पिता हँस पड़े।

Rocco हँसा।

ग्राहक हँसे।

मैं नहीं हँसा।

आख़िरकार Rocco ने मुझे 'सींगदार' कहना बंद कर दिया।

तभी उसे समझ आया कि मैं ठीक वैसा नहीं था जैसा उसने सोचा था।

मेरी माँ बहुत पहले ही इस नतीजे पर पहुँच चुकी थी।

अगली सुबह, वह मुझे सीधे बोर्डिंग स्कूल ले गई।

सिस्टर्स ऑफ़ सेंट विंसेंट।

उसने पंजीकरण शुल्क और सालाना फ़ीस एक ही भुगतान में चुका दी।

बीमा।

इस बात के ख़िलाफ़ कि मैं अड़तालीस घंटों में वापस लौट आऊँ।

उसने मदर सुपीरियर के साथ मेरे भविष्य के 'बर्ताव' को लेकर एक निजी समझ भी बना ली।

मेरे पिता एक सेल्समैन थे।

मदर सुपीरियर नेपल्स की थीं।

अब पीछे मुड़कर देखूँ, तो एक सेल्समैन पिता और एक नेपोलिटन मदर सुपीरियर का यह मेल आगे हुई

लगभग हर बात की वजह बताता है।

बिना ज़्यादा ध्यान खींचे, मेरे पिता ने यह भी पक्का किया कि कॉन्वेंट को Gillette की प्रचार-सामग्री

की लगातार आपूर्ति मिलती रहे।

ख़ासकर प्लास्टिक के थैले।

पाँच सौ कार्टन।

उन वर्षों में वे सोने के बराबर मोल के थे।

मिलना मुश्किल।

महँगे।

अनिवार्य।

ननों को वे बेहद पसंद थे।

जब भी सप्लाई कम पड़ने लगती, फ़ोन घनघना उठता।

Forcella की मदर सुपीरियर Maria Franca।

"श्रीमान Frega, शायद आप एक बार नमस्कार करने आ सकें।"

तभी मैंने एक अहम फ़र्क़ सीखा।

एक आध्यात्मिक नमस्कार होता था।

और एक सामाजिक नमस्कार होता था।

एक दिन सेल्स डायरेक्टर, Raffaele Di Tullio, ने मेरे पिता को ढूँढ़ते हुए घर फ़ोन किया।

उसके दुर्भाग्य से, उसे वे मिल गए।

"Frega, सुप्रभात। कैसे हो?"

"बढ़िया, डॉक्टर। शुक्रिया। पर यह कोई शिष्टाचार-भरा फ़ोन नहीं है।

बताइए।"

"हेडक्वार्टर में हम सब उत्सुक हैं।

हम यह समझना चाहते हैं कि एक अकेला सेल्समैन कैसे तीस प्रतिशत

पूरे इटली में बँटी प्रचार-सामग्री खा गया।

बस उत्सुकता।

और कुछ नहीं।

हमने आपको लगभग बत्तीस पैलेट प्लास्टिक थैले पहुँचाए।

हम सोच रहे हैं कि कारोबार कैसा चल रहा है।

Gillette का कारोबार नहीं।

प्लास्टिक-थैले का कारोबार।

आप उन्हें बेच रहे हैं?

मुनाफ़ा कमा रहे हैं?

या फिर बताना पसंद करेंगे कि दरअसल हो क्या रहा है?"

मेरे पिता ने पल भर की भी हिचकिचाहट नहीं की।

"मैं वेटिकन की मदद कर रहा हूँ।

उनके संसाधन सीमित हैं।

कोई बजट नहीं।

Reggio Calabria में सिस्टर्स ऑफ़ सेंट विंसेंट, जहाँ मेरा बेटा बड़ा हो रहा है, ने उनके धर्मार्थ कामों में

एक छोटी-सी साझेदारी की माँग रखी।

जैसा आपने मुझे सिखाया, डॉक्टर, मैंने इस पहल का कोई प्रचार नहीं किया।

मुझे पता है आप ऐसी चीज़ें चुपचाप होते हुए देखना पसंद करते हैं।

कोई प्रचार नहीं।

Gillette का तरीक़ा।"

ख़ामोशी।

एक लंबी ख़ामोशी।

आख़िरकार:

"बहुत बढ़िया, Frega।

मैं और सामग्री भेजूँगा।"

आठ सालों तक ननों ने कभी एक भी प्लास्टिक थैला नहीं ख़रीदा।

एक सवाल अनुत्तरित रह जाता है।

क्या होता अगर उन्होंने यह पूरा मामला ही एक कारोबार बना लिया होता?

वे ननें थीं।

पर वे औरतें भी थीं।

किसी ने जाँच नहीं की।

बोर्डिंग स्कूल के शुरुआती महीनों में कम-से-कम तीन घटनाएँ हुईं जो ननों को

बेहद परेशान करने वाली लगीं।

मुझे वे बिल्कुल सामान्य लगती थीं।

पहली घटना लुका-छिपी खेलते वक़्त हुई।

जब भी हम खेलते, मैं अनिवार्य रूप से ननों के निजी कमरों में जा पहुँचता।

मैं उत्सुक था।

मैं देखना चाहता था कि बिना घूँघट के ननें कैसी दिखती हैं।

मेरी सबसे बड़ी खोज एक सिस्टर थी जिसके बाल लगभग खोपड़ी तक मुँड़े हुए थे।

उसके बाद, हर तलाशी-दल उसी चेतावनी से शुरुआत करता।

"हर जगह देखो।

वह शैतान कहीं भी छुपा हो सकता है।"

मैं उनका दुःस्वप्न बन चुका था।

यह एहसास पूरी तरह दोतरफ़ा था।

दूसरी घटना सुबह की प्रार्थना-सभा (Mass) के दौरान हुई।

हर दिन साढ़े दस बजे बच्चे चैपल से निकलते वक़्त क़तार में लग जाते।

एक सिस्टर अपनी रोज़री आगे बढ़ाती और एक सीधा सवाल पूछती।

"धरती पर सबसे ताक़तवर हस्ती कौन है?"

सब मान्य जवाब देते।

"यीशु मसीह।"

फिर वे रोज़री को चूमते।

एक सुबह मैंने इस रस्म में एक छोटा-सा फेरबदल कर दिया।

रोज़री चूमने की बजाय, मैंने सिस्टर की पोशाक चूम ली।

फिर मैंने कहा:

"मेरे पिता कहते हैं कि औरतें भगवान से भी ज़्यादा ताक़तवर हैं।"

प्रतिक्रिया तुरंत आई।

मेरे माता-पिता को दोपहर के खाने से पहले ही बुला लिया गया।

संस्था उस शैतान को हटाना चाहती थी।

एक पर्याप्त उदार चेक ने गुनाह को चिंता में बदल दिया।

चिंता भी बड़ी तेज़ी से ग़ायब हो गई।

उस चेक में छह शून्य थे।

पुराने इतालवी लीरा बेहद असरदार होते थे।

बरस मासूमियत की छत्रछाया में रूमानी अंदाज़ में गुज़रते गए।

केक-उत्सव बस मुफ़्त में खाने के मौक़े थे।

थिएटर सच बोलने का एक मौक़ा था।

जब भी मैं किसी राजकुमार का किरदार निभाता, मैं दर्शकों को बता देता कि राजकुमारी को चूमा नहीं जाना चाहिए क्योंकि

वह बदसूरत थी और उसकी साँसों से बदबू आती थी।

शिक्षिकाओं की राय अलग थी।

आख़िरकार पाँचवीं कक्षा आ गई।

फिर अंतिम परीक्षा।

आयोग के एक सदस्य के मुँह से एक निजी विचार अनायास सार्वजनिक हो गया।

"आख़िरकार।

हम उससे छुटकारा पा रहे हैं।"

सब कुछ सुलझा हुआ लग रहा था।

सब कुछ ख़त्म हुआ लग रहा था।

मैंने तीस साल इंतज़ार किया।

फिर मैं लौटा।

मैंने Gillette के रेज़र ब्लेड का ऑर्डर दिया।

अग्रिम भुगतान।

किसी ने कभी नहीं पूछा कि ऐसा मुमकिन कैसे हुआ।

इकसठ साल बीत चुके हैं।

आज भी सवाल बाक़ी हैं।

हाल ही में मेरी बेटी ने मेरी तरफ़ देखा और कहा:

"माफ़ करना, Nando।

मैं तुम्हें पापा नहीं बुलाती।

पर आख़िर तुम हो कौन?"

आह।

अहाहाहाह।